उजास

डॉ. प्रेम सिंह

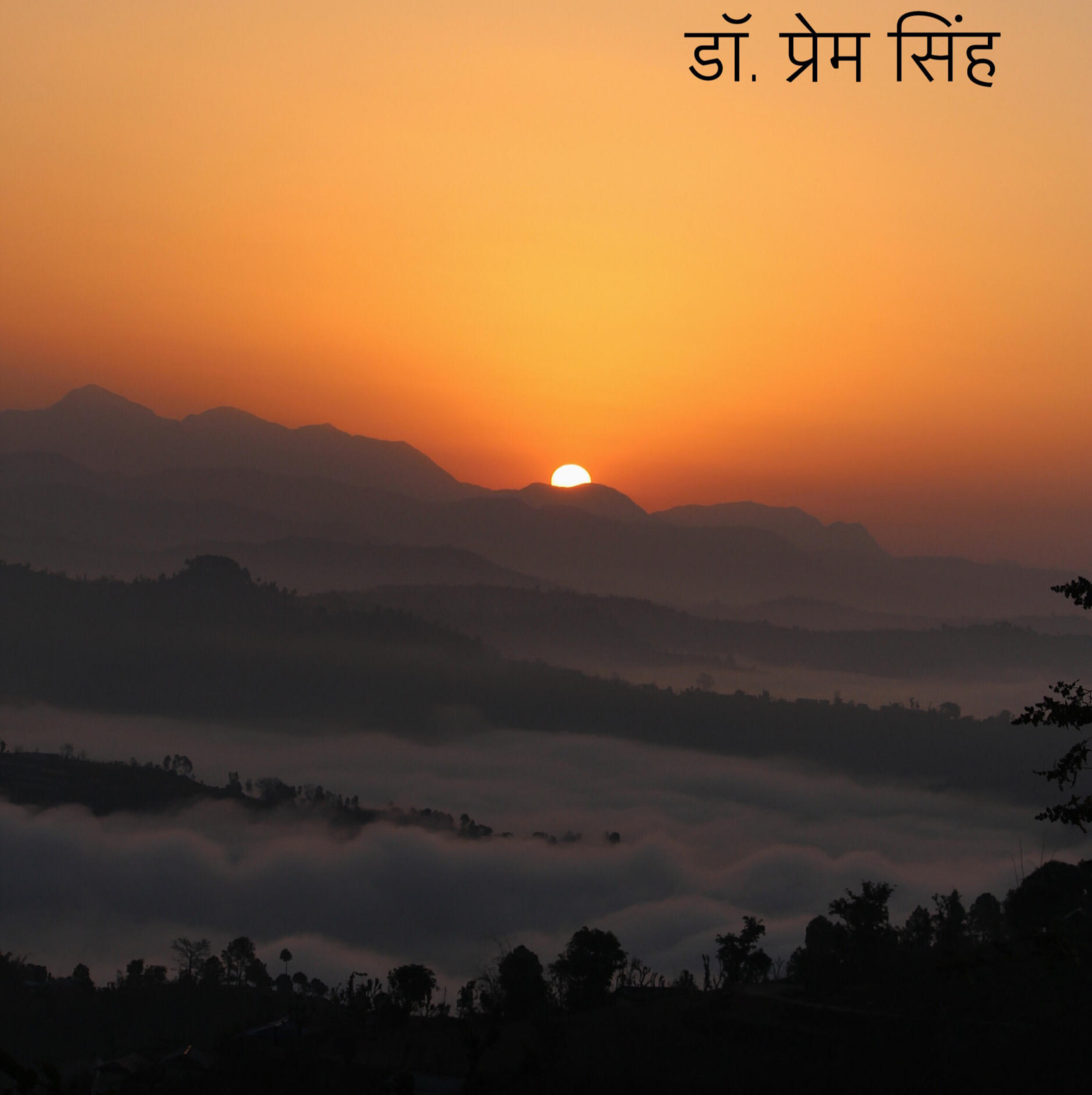

उजास

डॉ. प्रेम सिंह

अनुक्रम

चाबी	9
विक्षिप्त	10
भार	11
गिरना	12
ब-मुश्किल	13
वक़्त के हाथ	14
पहचान	15
गुंजलक	16
सूली	17
जरूरत	18
कैसे कहूँ	19
प्यार	20
लक्ष्य	21
उद्विग्नता	23
जकड़न	25
तू और तेरा पत्र	27
बवंडर	28
खुरदरी ज़मीन	29
मुझे पता नहीं	31

आहट	33
जीना छूटता नहीं	35
कामनाओं की चादर	37
वासन्ती बयार	39
वसन्त	41
स्वाभिमान	51
वैर	52
मुकदमा	53
निश्चित	54
ऊब	55
ज़िन्दगी	56
मन	57
योग-भोग	58
रास्ता	59
दरवाजा	61
रात	62
गलतियाँ	63
अंजानी	64
बूझ-अनबूझ	65
मुझे पता न था	66
उद्बोधन- 1	67
विकलांग वर्ग के लिए उद्बोधन	68

दीदार कैसे हो? 69
सावन 70
उद्बोधन- 2 71
हाय-हाय 73
माँ 74
साथ-साथ 75
जीना 76
क्षमा 77
इधर देख 78
सितार 82
निशान 86
यह हो नहीं सकता! 90
मैं तंग आ गई हूँ 94
अदम्य जीवन 95
फूल और मन 97
कृत्रिम अंग 100
श्रृंगार 104
विरह 106
ग़ज़लें 107

चाबी

तुमने समन्दर में चाबी फैंकी है,

मुझे ताला तोड़ना नहीं आता;

ताला खोलना अवश्य आता है,

उसी चाबी से;

जो तुमने समन्दर में फैंकी है।